क़ौमी एकता की बातें / कविता

निखिल सचान

मेरा इक दोस्त अक्सर कहता था, कि ये
कौमी एकता की बातें
बस कहने में अच्छी लगती हैं।
कहता था, कि तुम कभी
मुसलमानों के मोहल्ले में
अकेले गए हो ?
कभी जाकर देखो. डर लगता है।

वो मुसलमानों से बहुत डरता था
हालांकि उसे शाहरुख खान बहुत पसंद था
उसके गालों में घुलता डिम्पल
और उसकी दीवाली की रिलीज हुई फिल्में भी
दिलीप कुमार यूसुफ है, वो नहीं जानता था
उसकी फिल्में भी वो शिद्दत से देखता था
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

वो इंतजार करता था आमिर की क्रिसमस रिलीज का
और सलमान की ईदी का
गर जो ब्लैक में भी टिकट मिले
तो सीटियाँ मार कर देख आता था
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

वो मेरे साथ इंजीनियर बना
विज्ञान में उसकी दिलचस्पी इतनी कि
कहता था कि अब्दुल कलाम की तरह
मैं एक वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ
और देश का मान बढ़ाना चाहता हूँ
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

वो क्रिकेट का भी बड़ा शौकीन था
खासकर मंसूर अली खान के नवाबी छक्कों का
मोहोम्मद अजहरुद्दीन की कलाई का
जहीर खान और इरफान पठान की लहराती हुए गेंदों का
कहता था कि ये सारे जादूगर हैं
ये खेल जाएं तो हम हारें कभी न पाकिस्तान से
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

वो नरगिस और मधुबाला के हुस्न का मुरीद था
उन्हें वो ब्लैक एंड व्हाईट में देखना चाहता था
वो मुरीद था वहीदा रहमान की मुस्कान का
और परवीन बाबी की आशनाई का
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

वो जब भी दुखी होता था तो मुहम्मद रफी के गाने सुनता था
कहत था कि खुदा बसता है रफी साहब के गले में
वो रफी का नाम कान पर हाथ लगाकर ही लेता था
और नाम के आगे हमेशा लगाता था साहब
अगर वो साहिर के लिखे गाने गा दें
तो खुशी से रो लेने का मन करता था उसका
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

वो हर छब्बीस जनवरी को अल्लामा इकबाल का
सारे जहाँ से अच्छा गाता था
कहता था कि अगर
गीत पर बिस्मिल्ला खान की शहनाई हो
और जाकिर हुसैन का तबला
तो क्या ही कहने !
वो उनसे नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

उसे जब इश्क हुआ तो लड़की से
गालिब की गजल कहता
फैक के चंद शेर भेजता
उन्ही उधार के उर्दू शेरों पर पर मिटी उसकी महबूबा
जो आज उसकी पत्नी है
वो इन सब शायरों से नहीं डरता था
बस मुसलमानों से डरता था

बड़ा झूठा था मेरा दोस्त
बड़ा भोला भी
वो अनजाने ही हर मुसलमान से
करता था इतना प्यार

फिर भी न जाने क्यों कहता था, कि वो
मुसलमानों से डरता था
वो मुसलमानों के देश में रहता था
खुशी खुशी, मोहोब्बत से
और मुसलमानों के न जाने कौन से मोहल्ले में
अकेले जाने से डरता था

दरअसल
वो भगवान् के बनाए मुसलमानों से नहीं डरता था
शायद वो डरता था, तो
सियासत, अखबार और चुनाव के बनाए
उन काल्पनिक मुसलमानों से
जो कल्पना में तो बड़े डरावने थे
लेकिन असलियत में ईद की सेंवईयों से ज़्यादा मीठे थे

यह सप्ताह / मुस्कुराहट का महत्व

कोलंबा कालीधर

अगर आप एक अध्यापक हैं और जब आप मुस्कुराते हुए कक्षा में प्रवेश करेंगे तो देखिये सारे बच्चों के चेहरों पर मुस्कान छा जाएगी।

अगर आप डॉक्टर हैं और मुस्कराते हुए मरीज का इलाज करेंगे तो मरीज का आत्मविश्वास दोगुना हो जायेगा।

अगर आप एक गृहणी हैं तो मुस्कुराते हुए घर का हर काम कीजिये फिर देखना पूरे परिवार में खुशियों का माहौल छा जायेगा।

अगर आप घर के मुखिया हैं तो मुस्कुराते हुए शाम को घर में प्रवेश करेंगे तो देखना पूरे परिवार में खुशियों का माहौल बन जायेगा।

अगर आप एक बिजनेसमैन हैं और आप खुश होकर कंपनी में जाते हैं तो देखिये सारे कर्मचारियों के मन का टेंशन कम हो जायेगा और माहौल खुशनुमा हो जायेगा। अगर आप दुकानदार हैं और मुस्कुराकर अपने ग्राहक का सम्मान करेंगे तो ग्राहक खुश होकर आपकी दुकान से ही सामान लेगा।

कभी सड़क पर चलते हुए अनजान आदमी को देखकर मुस्कुराएं, देखिये उसके चेहरे पर भी मुस्कान आ जाएगी।

मुस्कुराइए, क्यूंकि मुस्कराहट के पैसे नहीं लगते; ये तो खुशी और संपन्नता की पहचान है। मुस्कुराइए, क्यूंकि आपकी मुस्कराहट कई चेहरों पर मुस्कान लाएगी।

मुस्कुराइए, क्यूंकि ये जीवन आपको दोबारा नहीं मिलेगा।मुस्कुराइए, क्योंकि क्रोध में दिया गया आशीर्वाद भी बुरा लगता है और मुस्कुराकर कहे गए बुरे शब्द भी अच्छे लगते हैं।

मुस्कुराइए , क्योंकि दुनिया का हर आदमी खिले फूलों और खिले चेहरों को पसंद करता है।

मुस्कुराइए, क्योंकि आपकी हँसी किसी की खुशी का कारण बन सकती है।

मुस्कुराइए, क्योंकि परिवार में रिश्ते तभी तक कायम रह पाते हैं जब तक हम एक दूसरे को देख कर मुस्कुराते रहते है।

मुस्कुराइए, क्योंकि मनुष्य होने की यही पहचान है।

इसलिए स्वयं भी मुस्कुराएं और औरों के चहरे पर भी मुस्कुराहट लाएं, यही जीवन का आनंद है।

और आनंद ही जीवन है।

ज़रा स्ट्रेस कम हों और वाक्य लंबे होने चाहिए- रौशन सेठ

रौशन सेठ के साथ रवीश कुमार

हमने नेहरू को नहीं देखा लेकिन रौशन सेठ में नेहरू देखा है। अचानक उनकी आवाज़ कानों में ठहर गई। मैं ठिठक गया। लाल रंग की वैगन आर की तरफ़ बढ़ते हुए रौशन सेठ रूक गए। मैं मुड़ा तो कहा कि मैं रौशन सेठ हूँ। आप तो नहीं पहचानते होंगे। मैंने कहा अरे सर शर्मिंदा न करें। मैं पार्किंग में दो लोगों को देख रहा था। बात कर रहा था सेठ से और ढूँढ रहा था गांधी और भारत एक खोज के नेहरू को।

फिर बात शुरू हो गई। मेरे और मेरे प्रोग्राम से शुरू होते हुए पटना के बैंक रोड पर पहुँच गए। जहां उनका बचपन बीता। उनके पिता डॉ सेठ पटना मेडिकल कॉलेज में प्रोफ़ेसर थे।

अपने पड़ोसी रिज़वी साहब के परिवार को याद करने लगे। आज के हालात में अपनी भूमिका खोजते सेठ 70 साल से अधिक की उम्र से भी टकराने लगे। सोचा उनसे कहूं कि बैंक रोड में एक चिल्ड्रन लाइब्रेरी हुआ करती थी। दिल्ली उप राज्यपाल रहे एक परिवार ने बनाई थी। वहाँ काफ़ी जाता था। उस सड़क से मेरा काफ़ी गहरा नाता है। लेकिन मैं बस उन्हें सुनते रहना चाहता था।

अचानक लगा कि वे मुझे भाषा पर कुछ टिप्स दे रहे हैं। देखिए सांप की रीढ़ को काटते काटते छोटा कर देते हैं लोग। सांप की सुंदरता चली जाती है। जैसा माला होती है न। बहुत सारे फूल एक धागे में होते हैं तो अच्छी लगती है। छोटे वाक्य मुझे पसंद नहीं हैं। भाव और अर्थ दोनों कट जाते हैं। वाक्य लंबे होने चाहिएँ और बहुत कम स्ट्रेस के साथ बोला जाना चाहिए। आप एक लंबे वाक्य में कई जगहों पर स्ट्रेस देंगे तो असर कम हो जाता है। छोटे वाक्य रखेंगे तो अर्थ चला जाता है।

और भी बातें हुईं। उनके जाते ही मैं मुड़ा और नोट्स बना लिया। सबक भूलना नहीं चाहिए। उसके बाद जिससे मिलना था मैं उनसे मिला तो सही लेकिन रौशन सेठ को टाटा कहने के बाद भी उन्हीं से मिलता रहा। ख़्याल रौशन हों और रौशन हो उनके अभिनय से ये दुनिया। ख़्याति से इतने दूर लगे जैसे कोई रूमाल गाड़ी से उतरते वक्त सीट पर छोड़ आया हो और ख़्याल ही न हो। मुलाक़ात इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में हुई थी।

-रवीश कुमार

अचानक लगा कि वे मुझे भाषा पर कुछ टिप्स दे रहे हैं। देखिए सांप की रीढ़ को काटते काटते छोटा कर देते हैं लोग। सांप की सुंदरता चली जाती है। जैसा माला होती है न। बहुत सारे फूल एक धागे में होते हैं तो अच्छी लगती है। छोटे वाक्य मुझे पसंद नहीं हैं। भाव और अर्थ दोनों कट जाते हैं। वाक्य लंबे होने चाहिएँ और बहुत कम स्ट्रेस के साथ बोला जाना चाहिए। आप एक लंबे वाक्य में कई जगहों पर स्ट्रेस देंगे तो असर कम हो जाता है। छोटे वाक्य रखेंगे तो अर्थ चला जाता है।